मान्यताओं को उखाड़े बिना वहां के व्यक्तियों, कला, साहित्य एवं वास्तुकला पर गहरा प्रभाव डाला, सिवाय वियतनाम के जहां चीनी संस्कृति का अधिक गहरा प्रभाव था।

उन्नीसवीं सदी में इस क्षेत्र में भारतीयों का उत्प्रवासन काफी बड़े पैमाने पर हुआ जब अंग्रेज, (जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के साथ-साथ बर्मा एवं माले प्रायद्वीप को भी उपनिवेश बना लिया था) भारतीयों को इस क्षेत्र में काफी बड़ी संख्या में ले गये। भारतीयों के रूप में उनको उस क्षेत्र के साधनों के शोषण हेतु कड़ी मेहनत करने वाले सस्ते मजदूर प्राप्त हुए और उन्होंने उनके सैनिक प्रशासन में निचले स्तरों पर काम करके उनकी सेना को भी काफी सहारा प्रदान किया।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद के काल में औपनिवेशिक प्रणाली का समापन हुआ और क्षेत्र में स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ। इससे भारतीय प्रवासियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा और उन्हें अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक भूमिकाओं और स्थितियों की सीमाओं को पुनः निर्धारित करना पड़ा। विशेषतौर से बर्मा एवं मलेशिया में समाज के बहुलवादी चरित्र ने भारतीय मूल के निवासियों के सामने विकट चुनौतियां पेश कर दी थी।

3.2 उत्प्रवासन के मूल स्थान और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीयों के दक्षिण पूर्व एशिया में आरंभिक आवासों का उल्लेख छठीं सदी ई.पू. के भारतीय साहित्य में देखने को मिलता है। भारत के महान ग्रन्थ रामायण में स्वर्ण द्वीप एवं यावा द्वीप का उल्लेख है। द्वीप, संस्कृत में "दोनों तरफ पानी के बीच की भूमि" को कहते हैं अर्थात् प्रायद्वीप या टापू, जबकि स्वर्ण का मतलब सोना एवं यावा का मतलब जौ होता है। पुराणों में मलाया का उल्लेख द्वीप एवं यावा द्वीप के रूप में किया गया है। हालांकि इन नामों के स्थानों की सही स्थिति के बारे में जानना कठिन है परन्तु हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि ये दक्षिण पूर्व एशिया में हैं जहां के प्रायद्वीप की मुख्य भूमि एवं टापुओं ने भारतीय व्यापारियों को सोने की तलाश में, यहां आने के लिए आकर्षित किया।

भारत के पूर्वी तट के समुद्र में यात्रा करने वाले व्यक्तियों के बीच में बर्मा देश का नीचे का भाग एवं माले प्रायद्वीप सोने की भूमि के रूप में जाने जाते थे और यह निश्चित प्रतीत होता है कि कम से कम छठवीं सदी ई.पू. के बाद से सोने एवं टीन की खोज में भारतीय व्यापारी इन भूमियों एवं प्रायद्वीपों की समुद्र से यात्रा करते रहे थे। तीसरी सदी ई.पू. में सम्राट अशोक ने स्वर्णभूमि शायद आधुनिक बर्मा का निचला भाग—पर बौद्ध मत के प्रचारक भेजे। जातकों यानि बुद्ध के जन्म की कहानियों में, जो प्राचीन भारत की लोक कथाओं में प्रतिष्ठित है, प्रायः स्वर्णभूमि की यात्रा के बारे में बताया गया है।

इसके अलावा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में दिये गये एक विवरण द्वारा राजा को किसी दूसरे के क्षेत्र पर कब्जा करने या अपनी अधिशेष जनसंख्या को वहां भेजकर नया देश बनाने की सलाह यह जाहिर करती है कि ईसाई संवत के पूर्व दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय प्रवासियों की एक लहर उठी थी।

उन्नीसवीं सदी के आखिरी चरण में दक्षिण पूर्व एशिया की सभ्यतागत प्राचीनताओं का अध्ययन कर रहे यूरोपीय विद्वानों ने जब वहां के धर्म, कला एवं वास्तुकला पर संस्कृत के प्रभाव की महत्ता को पहचाना तो उन्होंने यह माना कि ये सब पूर्व की तरफ भारतीय विस्तारीकरण के अभियानों के फलस्वरूप हुआ है।

3.2.1 शुरू के उत्प्रवासन के कारण एवं परिस्थितियां

जब हम दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीयों के उत्प्रवासन की शुरू की लहर के स्पष्टीकरण हेतु भारतीय इतिहास की खोज करते हैं तो निम्न कारण सामने आते हैं।

सबसे पहले यह समस्या, भारत की उस समय की अस्त व्यस्त परिस्थितियों की वजह से पैदा हुई जिसके कारण काफी संख्या में शरणार्थियों ने समुद्र के पार नये घर बसाने का प्रयत्न किया। कुछ विद्वानों का मत है कि तीसरी सदी ई.पू. में मौर्य सम्राट अशोक ने खून की नदी बहाकर कलिन्ग पर जो विजय प्राप्त की थी, वह भी इस बहिर्गमन का कारण हो सकती है। दूसरा मत है कि पहली सदी ई. में